St. Lawrence High School

A JESUIT CHRISTIAN MINORITY INSTITUTION

Hindi Study Material (7)

Class- 10

पाठ - नीड़ का निर्माण फिर- फिर

Date: 09/05/2020

कवि का परिचय

'हरिवंश राय बच्चन' हिंदी कविता के उत्तर छायावाद काल के प्रमुख कवियों में से एक है। उनकी सबसे प्रसिद्ध कृति 'मधुशाला' है। भारतीय फिल्म उद्योग के प्रख्यात अभिनेता 'अमिताभ बच्चन' उनके पुत्र है। उन्होंने पंजाबन तेजी सूरी से विवाह किया जो रंगमंच तथा गायन से जुड़ी हुई थी। इसी समय उन्होंने 'नीड़ का निर्माण फिर- फिर' जैसे कविताओं की रचना की जो कि बहुत ही प्रसिद्ध हुई।
उनकी कृतियाँ:
कविता संग्रह:
मधुशाला, मधुबाला,,आत्म परिचय, निशा निमंत्रण, सतरंगी आदि।
आत्मकथा:
क्या भूलूं क्या याद करूं, नीड़ निर्माण फिर फिर, बसेरे से दूर, दशद्वार के सोपान तक।
विविध:
बच्चन के साथ क्षण भर, सोपान, ओथेलो, आधुनिक कवि, नागर गीता, अभिनव सोपान, आदि।
पुरस्कार एवं सम्मान:
उनकी कृति 'दो चट्टानें' को 1969 में हिंदी कविता के 'साहित्य अकादमी पुरस्कार' से सम्मानित किया गया था। इसी वर्ष उन्हें 'सोवियत लैंड नेहरू पुरस्कार' तथा एशियाई सम्मेलन के 'कमल पुरस्कार' से भी सम्मानित किया गया। बिरला फाउंडेशन ने उनकी आत्मकथा के लिए उन्हें 'सरस्वती सम्मान' दिया था। बच्चन को भारत सरकार द्वारा 1976 में साहित्य एवं शिक्षा के क्षेत्र में 'पद्म भूषण' से सम्मानित किया गया था।

सारांश

नीड का निर्माण फिर- फिर
नेह का आह्वान फिर- फिर
वह उठी आंधी कि नभ में
छा गया सहसा अंधेरा
धूलि- धूसर बादलों ने
भूमि को इस भाँति घेरा
रात सा दिन हो गया, फिर
रात आई और काली
लग रहा था अब ना होगा
इस निशा का फिर सवेरा
रात के उत्पाद- भय से
भीत जन-जन, भीत कण-कण,
किंतु प्राची से उषा की
मोहिनी मुस्कान फिर- फिर
नीड़ का निर्माण फिर- फिर
नेह का आह्वान फिर- फिर

उ:प्रस्तुत पंक्तियों में कविवर 'हरिवंश राय बच्चन' चिड़िया के माध्यम से संसार को संदेश देते हैं कि व्यक्ति रुपी पक्षी को सदैव अपनी जीवन रूपी नीड के निर्माण में सचेत रहना चाहिए। जीवन में दुख की आंधी आती ही रहेगी, संपूर्ण जीवन रात जैसे काली अंधेरों से गिर जाएगी, पूर्ण संसार भय से कांप उठेगा लेकिन पूर्व से एक मोहिनीमई मुस्कान की एक झलक दिखाई देगी। फिर से अंधकार को नष्ट कर प्रकाश की ज्वाला जीवन को प्रकाशित करती रहेगी। जीवन के दुख बवंडर सुख के किरण से आलोकित हो जाएगा। इसलिए कवि आग्रह करते है कि दुख जीवन को कितना भी भयभीत एवं तहस-नहस क्यों न कर दे लेकिन हमें हमेशा सुख की कल्पना कर अपने जीवन में आगे बढ़ाते रहना चाहिए।

बह चले झोंके की काँपे
भीम का कायावान भूषर
जड़- समेत उखड़- पुखड़ कर
गिर पड़े, टूट विटप- वर
हाय! तिनकों से विनिर्मित

घोंसलों पर क्या न बीती
डगमगाए जा कि कंकड़
ईंट- पत्थर के महल- घर
बोल आशा के विहंगम
किस जगह पर तू छिपा था
जो गगन पर चढ़ उठाता
गर्व से निज वक्ष फिर- फिर!
नीड़ का निर्माण फिर- फिर!
नेह का आह्वान फिर- फिर!

उ: कवि 'बच्चन जी' भी व्यक्ति रूपी पक्षी को जीवन की प्रेरणा देते हैं कि मुसीबतों और संकटों के झोंके बहकर कितना ही धरती रूपी आकाश को अस्त व्यस्त क्यों ना कर दे। चाहे कितना भी विनाश क्यों ना मचाए, चाहे आशाओं के विशाल आकार वाले पहाड़ जड़ से क्यों न बिखर जाए जीवन में स्थापित विश्वासों के बड़े बड़े वृक्ष क्यों न टूट जाए किंतु व्यक्ति रूपी पक्षी को कभी भी भयभीत नहीं होना चाहिए। आशाओं के तिनकों से विनिर्मित जीवन रूपी घोसले को बहुत नकारात्मक स्थितियों से गुजरनी पड़ती है, जिसके कारण विश्वास डगमगा जाते हैं, तब आशा रूपी पक्षी हमारे जीवन को पूर्ण रूप से संभालकर हमारे जीवन को संवारने के राह पर अग्रसर होते है। प्रेम ही हमारे जीवन को संवारने उत्कृष्ट स्थान हासिल किया है। व्यक्ति रूपी को पक्षी को हमेशा आशावादी बनकर अपने जीवन की उत्कृष्टता की कल्पना करनी चाहिए।

कुद्ध नभ के वज्रदंतों
में उषा है मुस्कुराती,
घोर गर्जनमय गगन के
कंठ में खग- पंक्ति गाती।
एक चिड़िया चोंच में तिनका
लिए जो जा रही है,
वह सहज में ही पवन
उनचास को नीचा दिखाती।
नाश के दु:ख से कभी
दबता नहीं निर्माण का सुख,
प्रलय की निस्तब्धता से
सृष्टि का नवगान फिर- फिर
नीड का निर्माण फिर फिर!
नेह का आह्वान फिर- फिर!

उ: समस्याओं रूपी क्रोधित आकाश में आकाश रूपी उषा मुस्कुराती हुई आती है। भयंकर घोर गर्जनमय गगन में पक्षियों की पंक्ति आशा रूपी गीत गाती है। इस भयंकर परिस्थिति में एक चिड़िया अपनी चोंच में आशा रूपी तिनका लिए हुए उड़ी चली जा रही है और अपनी उड़ान को कम करने वाली वायु अपने उसी प्रकार कमतर अर्थात पचास से उनचास बनाने में प्रचेष्ठित है हमें भी इस चिड़िया की भांति पवन को पराजित करने करते हुए जीवन को संवारना चाहिए। विनाश के दुख से निर्मित सुख कभी भी दबता नहीं है। प्रलय की इस भयंकर निस्तब्धता के पश्चात सृष्टि का नया गाना फिर उपलब्ध होगा। जीवन रूपी नीड का निर्माण प्रेम के माध्यम से ही सिद्ध होगा।

<u>शब्दार्थ</u>

आह्वान- उद्घोषणा, सहसा- अचानक, धूलि- धूसर- धूल से भरे हुए, भीत- डरा हुआ, प्राची- पूर्व दिशा, मोहिनी- आकर्षण, भीम कायावान- बड़े बड़े पर्वत, विटप- वृक्ष, विनिर्मित- बने हुए, विहंगम- पक्षी, निज वक्ष- अपनी छाती, कुद्ध- क्रोधित, वज्रदंत- वज्र के समान कठोर दांत, निस्तब्धता- सन्नाटा।

<u>लघु प्रश्न</u>

१) कवि हरिवंश राय बच्चन जी नीड़ को किससे संबंधित करते है?
उ: कवि हरिवंश राय बच्चन जी नीड़ को जीवन से संबंधित करते है।

२) "इस निशा का फिर सवेरा" से क्या तात्पर्य है?
उ: जीवन में मुश्किलों भरी विषाद में आशा रूपी सवेरा।

३) उषा की मोहिनी मुस्कान फिर कहाँ से दिखाई देगी?
उ: उषा की मोहिनी मुस्कान फिर प्राची से दिखाई देगी।

४) "गिर पड़े टूटे विटप- वर।"आशय क्या है?
उ: इस पंक्ति का आशय इस प्रकार है कि मुश्किल की घड़ी में जीवन रूपी नीड़ पूरी तरीके से एक वृक्ष की भांति टूट कर बिखर जाते है।

५) "प्रलय की निस्तब्धता से
सृष्टि का नवगान फिर- फिर। "
- आशय स्पष्ट कीजिए।
उ: जीवन में जब प्रलय अर्थात आपदा या विपदा का पदार्पण होता है तब उस समय में संपूर्ण संसार धूलिग्रस्त हो जाता है। परंतु उसी काली अंधेरी रात्रि के पश्चात ही सृष्टि का नयागान, सृष्टि का उषा उत्पन्न होता है।

Teacher's Name - Riya Saha